सामाजिक विज्ञान के अध्यापकों की प्रशिक्षण सम्बन्धी आवश्यकताएँ: स्थिति और सुधार के संदर्भ में

डॉ.मितेश जुनेजा
व्याख्याता
श्रीरतन लाल कंवरलाल पाटनी कन्या महाविद्यालय
किशनगढ़, राजस्थान

1.प्रस्तावना

समय और परिस्थितियों में लगातार परिवर्तन से एक शिक्षक का कक्षा–कक्ष में प्रभावी शिक्षण चुनौतीपूर्ण है। इसके अनेक कारण दिखायी देते हैं। प्राचीन समय से ही शिक्षक को समाज निर्माण की एक धुरी माना जाता रहा है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति भी इस बात पर जोर देती है कि शिक्षक को समाज की सामाजिक–सांस्कृतिक विशिष्टताओं को प्रतिबिंबित करना चाहिए। आज के इस उदारीकरण, निजीकरण और वैश्वीकरण के युग में शिक्षक के प्रति अपेक्षाओं में विस्तार हुआ है। इस मौजुदा हालात में यह बात सभी ओर से सामने आती है कि देश और समाज की समस्याओं के समाधान में शिक्षा की अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका है या ऐसा भी कहा जाता है कि केवल शिक्षा ही समस्याओं के निर्मुलीकरण का एक मार्ग बना सकती है। यह बात भी स्पष्ट है कि समाज और विद्यालय का पृथक्कीकरण नहीं किया जा सकता है क्योंकि जो विद्यालय में बोया जाता है वह समाज में उपजता है इसलिए आवश्यक है कि जैसे जॉन डीवी ने विद्यालय को समाज का एक लघु रूप माना है उसी विचार के साथ सामाजिक और राष्ट्रीय विकास के रास्ते तय करने पर केन्द्रीयकरण किया जाना चाहिए।

आवश्यकता मानव की मूलभूतता से जुड़ी है लेकिन उसे विभिन्न दृष्टिकोणों में समझा जा सकता है। किसी भी परिस्थिति की सतत्ता इस बात को सिद्ध करती है कि वह उस सन्दर्भ में प्रासंगिक है जिस हेतु वे निर्मित की गई हैं। यदि कहीं अवरोध, अपेक्षाएँ व चुनौतियों का मार्ग निर्मित होता है तो इसका अभिप्राय यह होता है कि संदर्भ परिवर्तित हो रहे हैं और परिस्थितियाँ बदलने की क़वायद कर रही हैं जिससे बदलाव हर क्षण परिलक्षित हो रहा है जो कि सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक और पर्यावरणीय परिवेश आदि आधार पर अवलम्बित होता है। शिक्षा में भी यह एक नवीन रूप में दिखाई देता है। इस प्रकार मानव अनेक प्रकार की आवश्यकताओं को महसूस करता है जो उसके क्षेत्र को सहज, सरल व अधिक प्रभावी बनाए। प्रस्तुत शोध में आवश्यकता को इसी सन्दर्भ में उल्लेखित करने का प्रयास किया गया है।

सामान्य शिक्षा के घटक के रूप में सामाजिक विज्ञान के अध्यापन का विशेष महत्त्व है। माध्यमिक कक्षाओं के माध्यम से जहाँ एक ओर हिन्दी, अंग्रेजी, गणित, विज्ञान, संस्कृत विषयों का अध्ययन करवाया जाता है तो वहीं दूसरी ओर सामाजिक विज्ञान के माध्यम से इतिहास, भूगोल, अर्थशास्त्र,

राजनीतिविज्ञान तथा आपदा प्रबंधन जैसे उपविषयों की विषयवस्तु को भी आन्तरीकृत कराने का प्रयास किया जाता है। अतः सामाजिक विज्ञान विषय की पृथक छवि को समझने की आवश्यकता है। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 में सामाजिक विज्ञान के अभिप्राय और अपेक्षाओं को स्पष्ट करते हुए बताया गया है कि सामाजिक विज्ञान के अन्तर्गत समाज के विविध सरोकार आते हैं। इसकी अन्तर्वस्तु बहुत विविध है जिसमें इतिहास, भूगोल, राजनीति विज्ञान, अर्थशास्त्र, समाजशास्त्र और मानव विज्ञान जैसे विषयों की विषयवस्तु समाहित की जाती है। सामाजिक विज्ञान की अनुभूतियाँ और ज्ञान, एक समतामूलक और शांतिमूलक समाज का ज्ञान आधार तैयार करने की दिशा में अपरिहार्य हैं। सामाजिक विज्ञान की विषयवस्तु का लक्ष्य जानी–पहचानी सामाजिक सच्चाई की समीक्षात्मक जाँच तथा उस पर प्रश्न करते हुए विद्यार्थियों में आलोचनात्मक जागरूकता का संवर्धन, होना चाहिए। विद्यार्थियों के अपने जीवन–संदर्भों के संबंध में नए आयामों और नए पहलुओं को जगह दी जा सकती है। एक सार्थक पाठ्यचर्या जो विद्यार्थियों के लिए सामग्री चयन और उनका निर्धारण, जो विद्यार्थियों में समाज के प्रति आलोचनात्मक समझ का विकास करे, यह एक चुनौतीपूर्ण कार्य है। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा एवं सामाजिक विज्ञान विषय से जुड़े आधार पत्र में भी विषय की स्थिति और उसमे सुधार पर केन्द्रण किया गया है जिससे स्पष्ट होता है कि सामाजिक विज्ञान विषय किस प्रकार की चुनौतियों का सामना कर रहा है और उससे जुड़ी धारणाओं को दूर करना कितना आवश्यक हो गया है। इसी संदर्भ को ध्यान में रखते हुए उक्त अध्ययन की आधारशिला निर्मित होती है।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 में स्पष्ट किया गया है कि प्रशिक्षण की गुणवत्ता का एक बड़ा मानक है शिक्षक के लिए उसकी प्रासंगिकता। लेकिन इस तरह के कार्यक्रम वास्तविक जरूरत को ध्यान में रखकर नही बनाए जाते। अधिकांश कार्यक्रमों में भाषण आधारित अभिगम अपनाया जाता है जिसमें प्रशिक्षुओं को भागीदारी करने का मौका नही मिलता है। विडंबना यह है कि गतिविधि आधारित शिक्षा, बड़ी कक्षाओं का प्रबंधन, बहुस्तरीय शिक्षा और सामूहिक शिक्षण जैसे विषय जिन्हे करके दिखाने की जरूरत है, उन्हे भी भाषणों द्वारा पढ़ाया जाता है। सेवापूर्व शिक्षण और सेवाकालीन प्रशिक्षण के दौरान शिक्षकों का पर्याप्त अभिमुखीकरण हो और ऐसी क्षमता का विकास हो कि वे पाठ्यचर्या रूपरेखा की चुनौतियों को समझें तथा उनका सामना कर सकें। सेवाकालीन प्रशिक्षण विशेष रूप से शिक्षकों के कक्षानुभव के संदर्भ में होना चाहिए। साथ ही साथ अध्यापक शिक्षा की राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा में भी प्रशिक्षण कार्यक्रम पर ध्यान दिया गया है।

2. अध्ययन का औचित्य

इस अध्ययन का सीधा और स्पष्ट सम्बन्ध सामाजिक विज्ञान के अध्यापकों की प्रशिक्षण सम्बन्धी आवश्यकताओं से जुड़ा हुआ है जो कि सेवारत अध्यापक प्रशिक्षण की आधारशिला का निर्माण करेगा। वर्तमान समय में जहाँ राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 में सेवारत प्रशिक्षण कार्यक्रम के प्रति गहन चिंता के साथ उससे सम्बन्धित पहल और रणनीतियों को प्रस्तुत किया है, वहीं अध्यापक शिक्षा की राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2009 में भी सेवारत अध्यापकों के प्रशिक्षण के लिए कुछ महत्त्वपूर्ण सिद्धान्तों को बताया गया है। इस प्रकार यह अध्ययन सामाजिक विज्ञान के अध्यापकों की प्रशिक्षण सम्बन्धी आवश्यकताओं का पता लगाकर उनमें सुधार हेतु सहायक सिद्ध होगा ताकि छात्रों

की सामाजिक विज्ञान के प्रति नीरसता की समस्या के समाधान का एक सफल मार्ग खोजने का प्रयास किया जा सके। स्पष्ट है कि सामान्यतः सामाजिक विज्ञान विषय की महत्ता और उपयोगिता पर सवाल खड़े किए जाते रहे हैं, इसलिए यह अध्ययन केवल विषय और उसके शिक्षकों के संदर्भ में ही नही बल्कि समाज और राष्ट्र की दृष्टि से भी महत्त्वपूर्ण है। साथ ही भविष्य में इस संदर्भ में किए जाने वाले अध्ययनों के लिए भी यह अध्ययन पथ प्रर्दशक की भूमिका निभाएगा।

3. समस्या कथन

समस्या कथन के माध्यम से अनुसंधान समस्या को व्यवस्थित रूप में दर्शाया जाता है। प्रस्तुत अनुसंधान का समस्या कथन निम्नानुसार है:

''सामाजिक विज्ञान के अध्यापकों की प्रशिक्षण सम्बन्धी आवश्यकताएँ: स्थिति और सुधार के संदर्भ में ''

4. अध्ययन के उद्देश्य

प्रस्तुत अनुसंधान हेतु निम्नलिखित उद्देश्यों का निर्माण किया गया

(i) राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 और राष्ट्रीय फोकस समूह के आधार पत्र के अनुसार सामाजिक विज्ञान की स्थिति से जुड़ी आवश्यकताओं का पता लगाना।

(ii) उपर्युक्त दस्तावेजों के संदर्भ में विषय से जुड़ी सुधार से संबंधित आवश्यकताओं का पता लगाना

5. पारिभाषिक शब्दावली

- सामाजिक विज्ञानः– माध्यमिक कक्षाओं के पाठ्यक्रम में सम्मिलित एक अनिवार्य विषय जो कि विभिन्न समाज विज्ञानों को एकीकृत स्वरूप में प्रस्तुत करता है।
- प्रशिक्षण सम्बन्धी आवशयकताएँः– नवीन एवं बदलते आयामों से अवगत कराने का एक उपयुक्त माध्यम प्रशिक्षण होता है जिससे संदर्भित व्यक्ति को बदलाव के अनुरूप तैयार किया जाता है। अध्यापकों हेतु सेवारत प्रशिक्षण कार्यक्रम भी इसी प्रकार के प्रशिक्षण कार्यक्रम कहलाते हैं। विशेषतः सी.टी.ई. संस्थानों द्वारा माध्यमिक स्तर के अध्यापकों हेतु सेवारत प्रशिक्षण कार्यक्रम संचालित किये जाते हैं। अतः इन प्रशिक्षण कार्यक्रमों की रूपरेखा भी अध्यापकों की आवश्यकताओं के अनुरूप ही तैयार की जानी चाहिए। प्रस्तुत अनुसंधान अध्यापकों की इन्हीं प्रशिक्षण सम्बन्धी आवश्यकताओं की पड़ताल करता है।

6. अध्ययन का परिसीमन

अध्ययन में परिसीमन की अत्यधिक महत्ता है। इसी के आधार पर अनुसंधान को एक सीमा रेखा या दायरे के मध्य तथ्यों के एकत्रण, वर्गीकरण, सारणीयन, व्याख्या, विश्लेषण और निष्कर्ष को प्रस्तुत किया जा सकता है। प्रस्तुत अनुसंधान हेतु निम्नानुसार परिसीमन किया गया।

- अध्ययन को उदयपुर शहर और ग्रामीण क्षेत्र तक सीमित रखा गया है।

- अध्ययन राजकीय माध्यमिक विद्यालयों के सामाजिक विज्ञान विषय के अध्यापकों तक ही सीमित रखा गया है।

7. न्यादर्श

कुछ को देखकर या परीक्षा कर सब के बारे में अनुमान लगा लेने की विधि को न्यादर्श कहते है। वास्तविक स्थिति में सम्पूर्ण क्षेत्र से तथ्यों को एकत्रित करना विस्तृत कार्य होता है। अतः सम्पूर्ण में से वैज्ञानिक तरीके से तथ्यों को प्रतिनिध्यात्मक रूप में चयनित करना न्यादर्श है। अध्ययन हेतु उद्देश्यपूर्ण विधि द्वारा उदयपुर के ग्रामीण और शहरी क्षेत्र के विद्यालयों से 80 सामाजिक विज्ञान के अध्यापकों का चयन किया गया और उसी आधार पर तथ्यों को एकत्रित किया गया।

8. अनुसंधान उपकरण

किसी भी अनुसंधान के प्रभावी आधार स्तम्भ का निर्माण उस अनुसंधान में प्रयुक्त उपकरण होते है। यदि उपकरण का निर्माण उचित रूप में कर लिया जाए तो तथ्यों के संकलन, विश्लेषण ,निष्कर्ष और सामान्यीकरण में सरलता आ जाती है। इसी को ध्यान में रखते हुए उक्त अनुसंधान में सामाजिक विज्ञान के अध्यापकों हेतु प्रश्नावली का निर्माण किया गया। उपकरण निर्माण हेतु संबंधित साहित्यों का अध्ययन करने के पश्चात् क्षेत्रों का निर्धारण किया गया। क्षेत्रों से संबधित कथनों के निर्माण हेतु कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमे सामाजिक विज्ञान विषय और शिक्षाशास्त्र से जुड़े विषय विशषज्ञों को आमंत्रित किया गया विशेषतः पाठ्यपुस्तकों, विभिन्न अध्ययनों से संबंधित साहित्य, सामाजिक विज्ञान विषय से जुड़े राष्ट्रीय दस्तावेज और राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान द्वारा निर्मित प्रशिक्षण सामग्री पर चर्चा और संवाद के माध्यम से कथनों का निर्माण किया गया। उपकरण की विश्वसनीयता और वैधता को देखने के पश्चात् अंतिम रूप में बने उपकरण से सामाजिक विज्ञान विषय के शिक्षकों से उनकी विषय से संबंधित आवश्यकता का पता लगाया गया।

9. अध्ययन विधि

अध्ययन के लिए सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया। अध्ययन में क्षेत्रीय अध्ययन के माध्यम से तथ्यों को एकत्रित किया जाना था। इस हेतु क्षेत्र में जाकर उत्तरदाताओं से स्वनिर्मित प्रश्नावली के माध्यम से विषय से जुड़ी आवश्यकताओं को जानने का प्रयास किया गया। इस प्रकार उपर्युक्त तरीके से काम करने के लिए सर्वेक्षण विधि ही उचित प्रतीत होती है।

10. सांख्यिकी प्रविधि

अध्ययन में एकत्रित तथ्यों को वर्गीकरण और सारणीयन करने की दृष्टि से सांख्यिकीय प्रविधि का प्रयोग किया जाना आवश्यक प्रतीत होता है, इसी को ध्यान में रखते हुए अध्ययन में प्रतिशत प्रविधि का प्रयोग किया गया।

11. तथ्यों का विश्लेषण एवं व्याख्या

प्रस्तुत अध्ययन में प्रश्नावली के निर्माण से पूर्व यह विचार किया गया कि सामान्यतः प्रश्नावली शिक्षकों की वास्तिविक आवश्यकता को नही प्रस्तुत कर पाती है। अधिकांश अध्ययनों में सीधे, प्रत्यक्ष

और लिकर्ट स्केल के माध्यम से प्रशिक्षण संबंधी आवश्यकताओं को जानने का प्रयास किया जाता है जिससे वास्तविकता का पता लगाने का प्रयास किया जाता है लेकिन कही न कही और किसी न किसी रूप में संशय बरकरार रहता है। अतः कही प्रत्यक्ष तो कही अप्रत्यक्ष तौर पर पूछे गए सवालों के माध्यम से वास्तविक जानकारी का पता लगाया जा सकता है जोकि उक्त अध्ययन का केन्द्रिय पक्ष है।

इसके लिए वरीयता निर्धारण वाले कथन क्षेत्रों का निर्माण किया गया। इस प्रकार के कथन–क्षेत्रों में सामाजिक विज्ञान के अध्यापकों को समस्त कथनों को उनकी आवश्यकता की मात्रा के आधार पर एक वरीयता क्रम में जमाकर उनके आगे उनका वरीयता क्रमांक लिखने को कहा गया। उपर्युक्त विधि को अपनाने के पीछे 'आवश्यकता' की अवधारणात्मक प्रकृति ही थी। आवश्यकता एक ऐसा तत्व है, जिसे केवल मात्रा में ही व्यक्त किया जा सकता है, क्योंकि यह कम अथवा अधिक कुछ भी हो सकती है। ऐसे में तीन अथवा पाँच बिन्दुओं पर आधारित सविकल्प प्रश्न आवश्यकता को मापने हेतु कदापि उचित सिद्ध नहीं हो पाते। अतएव कथनों की वरीयता निर्धारण विधि का अनुप्रयोग किया गया।

12. सांख्यिकी अनुप्रयोग की विधि

वरीयता निर्धारण आधारित कथन–क्षेत्रों में प्रत्येक कथन की आवश्यकता को उसके कुल भारांक के रूप में प्रतिशत के द्वारा प्रस्तुत किया गया, जिसे निम्न चरणों के अन्तर्गत ज्ञात किया गया–

चरण 1) सर्वप्रथम प्रत्येक कथन का वरीयतानुसार भारांक ज्ञात किया गया। इसमें प्रत्येक वरीयता का भारांक उसे देने वाले प्रदाताओं की संख्या को उसके क्रमांक से गुणनफल कर निकाला गया।

चरण 2) कथन के विभिन्न वरीयतानुसार प्राप्त भारांकों का योगफल कर उस कथन का कुल भारांक ज्ञात किया गया।

चरण 3) कुल भारांक को उसके अधिकतम भारांक से विभाजित कर, 100 से गुणा कर प्रतिशत के रूप में व्यक्त किया गया, जो कि उस कथन की प्रशिक्षण आवश्यकता को प्रदर्शित करता है। इससे पहले अधिकतम भारांक को कुल न्यादर्श संख्या अर्थात् 80 को सम्बन्धित कथन–क्षेत्र के अधिकतम वरीयता क्रमांक से गुणा कर ज्ञात कर लिया गया था।

13. व्याख्या की विधि

प्रस्तुत अध्ययन में सारणीयन एवं विश्लेषण के उपरान्त प्राप्त समंकों की व्याख्या भी एक विशिष्ट ढंग से की गई। जैसा कि पूर्व में बताया गया है कि आवश्यकता एक ऐसा तत्व है, जिसे केवल मात्रा में ही व्यक्त किया जा सकता है। अतः विभिन्न कथनों को उनकी आवश्यकता अर्थात् कुल प्राप्तांक के प्रतिशत के आधार पर तीन वर्गों– तीव्र, मध्यम एवं निम्न प्रशिक्षण आवश्यकता वाले क्षेत्रों के अन्तर्गत वर्गीकृत किया गया, ताकि उन कथनों के बारे में विशिष्ट अनुमान लगाया जा सके।

कथनों को उपरोक्त वर्णित वर्गों में वर्गीकृत करने से पूर्व यह भी ध्यान में रखा गया कि उन प्रश्नों की प्रकृति कैसी है? आवश्यकता एक सापेक्ष अवधारणा है, जिसका अर्थ आरोही अथवा अवरोही

प्रकृति से समुच्चयित प्रश्नों के अनुसार निश्चित रूप से परिवर्तित होता है। अतः प्रश्नों की प्रकृति के अनुसार ही उन्हें तीव्र, मध्यम अथवा निम्न अनुभागों में विभक्त किया गया।

आवश्यकता की मात्रा के आधार पर कथनों का वर्गीकरण

कथन–क्षेत्रों की प्रकृति	सम्मिलित कथन–क्षेत्र संख्या	तीव्र प्रशिक्षण आवश्यकता	मध्यम प्रशिक्षण आवश्यकता	निम्न प्रशिक्षण आवश्यकता
		(भारांक–प्रतिशत)		
आरोही	2	0 से 33 तक	33 से 67 तक	67 से 100 तक
अवरोही	1	67 से 100 तक	33 से 67 तक	0 से 33 तक

इस प्रकार अध्ययन में एक नवीन अनुप्रयोग के माध्यम से वास्तविक तथ्यों को प्राप्त करने का प्रयास किया गया ताकि सामाजिक विज्ञान विषय से संबंधित आवश्यकताओं का एक उपुयक्त चित्र प्रस्तुत किया जा सके।

इसे निम्नानुसार सारणी रूप में प्रस्तुत किया जा रहा है।

सामाजिक विज्ञान की स्थिति या प्रचलित धारणाओं से सम्बन्धित प्रि"ाक्षण आव"ायकता की व्याख्या एवं वि"लेषण।

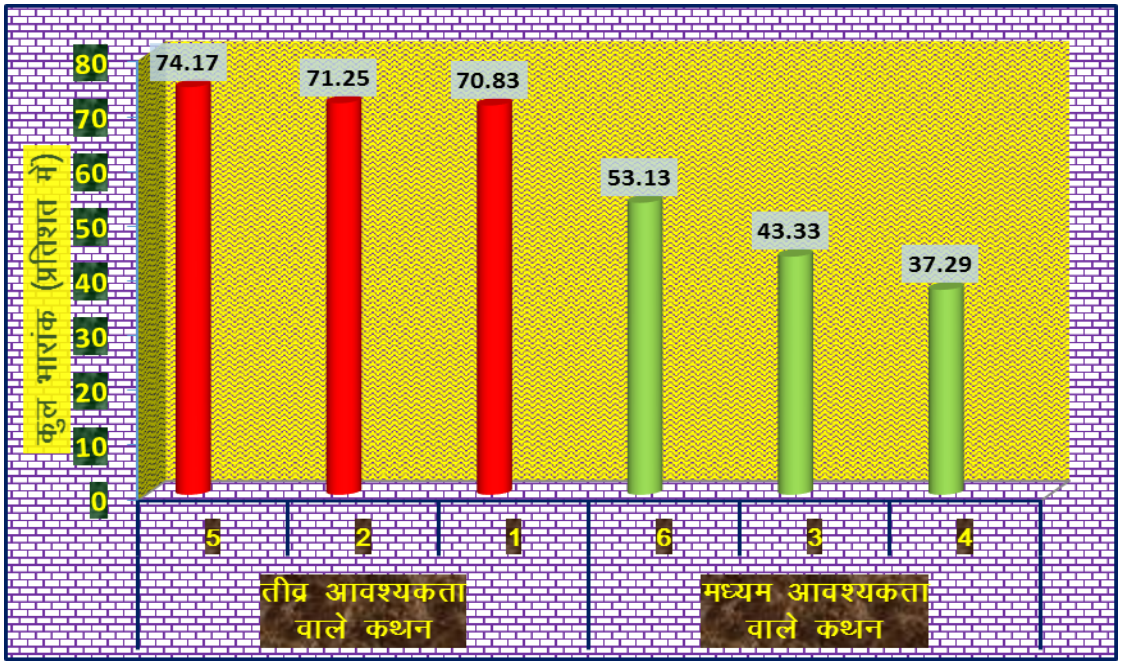

सारणी संख्या 1.1

सामाजिक विज्ञान की स्थिति या प्रचलित धारणाओं से सम्बन्धित आवश्यकता

क्र. सं.	कथन → / वरीयता क्रमांक/वरीयता भारांक →	वरीयता प्रदाताओं की संख्या/उनका भारांक I 6	II 5	III 4	IV 3	V 2	VI 1	कुल भारांक (480 में से)	कुल भारांक का प्रतिशत
1	सामाजिक विज्ञान को एक अनुपयोगी विषय समझा जाता है। जिससे विद्यार्थी के स्वाभिमान में कमी आती है।	19 / 114	20 / 100	19 / 76	10 / 30	8 / 16	4 / 4	340	70.83%
2	सामाजिक विज्ञान में केवल सूचनाओं का अंबार है।	17 / 102	22 / 110	23 / 92	6 / 18	8 / 16	4 / 4	342	71.25%
3	विद्यार्थियों तथा शिक्षक दोनों इसके विषय के घटकों को ग्रहण करने में अरुचि का अनुभव करते हैं।	7 / 42	4 / 20	10 / 40	16 / 48	15 / 30	28 / 28	208	43.33%
4	इसे भूतकाल के विषय में अनावश्यक जानकारियाँ देने वाला विषय भी माना जाता है।	6 / 36	3 / 15	8 / 32	7 / 21	19 / 38	37 / 37	179	37.29%
5	सामाजिक विज्ञान में विषेषज्ञता हासिल करने वाले को नौकरी के अधिक अवसर नहीं मिलते।	23 / 138	23 / 115	10 / 40	15 / 45	9 / 18	0 / 0	356	74.17%
6	यह विषय वास्तविक दुनिया में काम पुरा करने के कौषलों से रहित है। अतः यह विषय व्यर्थ है।	8 / 48	8 / 40	10 / 40	26 / 78	21 / 42	7 / 7	255	53.13%

आरेख संख्या 1.1

सामाजिक विज्ञान की स्थिति या प्रचलित धारणाओं से सम्बन्धित प्रशिक्षण आवश्यकता का मात्रानुसार वर्गीकरण

उपरोक्त सारणी संख्या 1.1 व आरेख संख्या 1.1 से स्पष्ट है कि–

1. अध्यापकों द्वारा किये गये वरीयता निर्धारण में सामाजिक विज्ञान विषय की व्यावसायिक अनुपयोगिता से जुड़ी भ्रांति को सर्वाधिक भारांक प्राप्त हुआ है। साथ ही इसके विद्यार्थी हेतु अनुपयोगी होने एवं इसे मात्र सूचनाओं का अम्बार समझे जाने सम्बन्धी धारणाओं को भी सर्वाधिक भारांक प्रदान कर अध्यापकों द्वारा यह स्पष्ट किया गया है कि उनमें अभी इस विषय की प्रासंगिकता एवं प्रकृति की समझ का अभाव है। अतः प्रशिक्षण की दृष्टि से इन्हें तीव्र आवश्यकता की श्रेणी में रखा गया है।
2. अवास्तविकता, अरूचिपूर्ण होना एवं मात्र भूतकालीन पर आश्रितता इत्यादि ऐसी धारणाएँ हैं, जिन्हें भारांक के आधार पर मध्यम श्रेणी की प्रशिक्षण आवश्यकताओं के अन्तर्गत रखा गया है। ये वे भ्रांतियाँ हैं, जो ज्यादा गहरी नहीं है। अतः इन्हें उपयुक्त प्रशिक्षण द्वारा शीघ्र दूर किया जा सकता है।
3. सामाजिक विज्ञान विषय से जुड़ी किसी भी धारणा या भ्रांति को निम्न प्रशिक्षण आवश्यकता वाले वर्ग में स्थान नहीं मिला है अर्थात् अध्यापकों को किसी न किसी रूप में भ्रांतियाँ हैं ही, जिनके दूर करने हेतु प्रशिक्षण आवश्यक है।

1.2 एनसीएफ 2005 के अनुसार सामाजिक विज्ञान में सुधार से सम्बन्धित प्रशिक्षण आवश्यकता की व्याख्या एवं विष्लेषण।

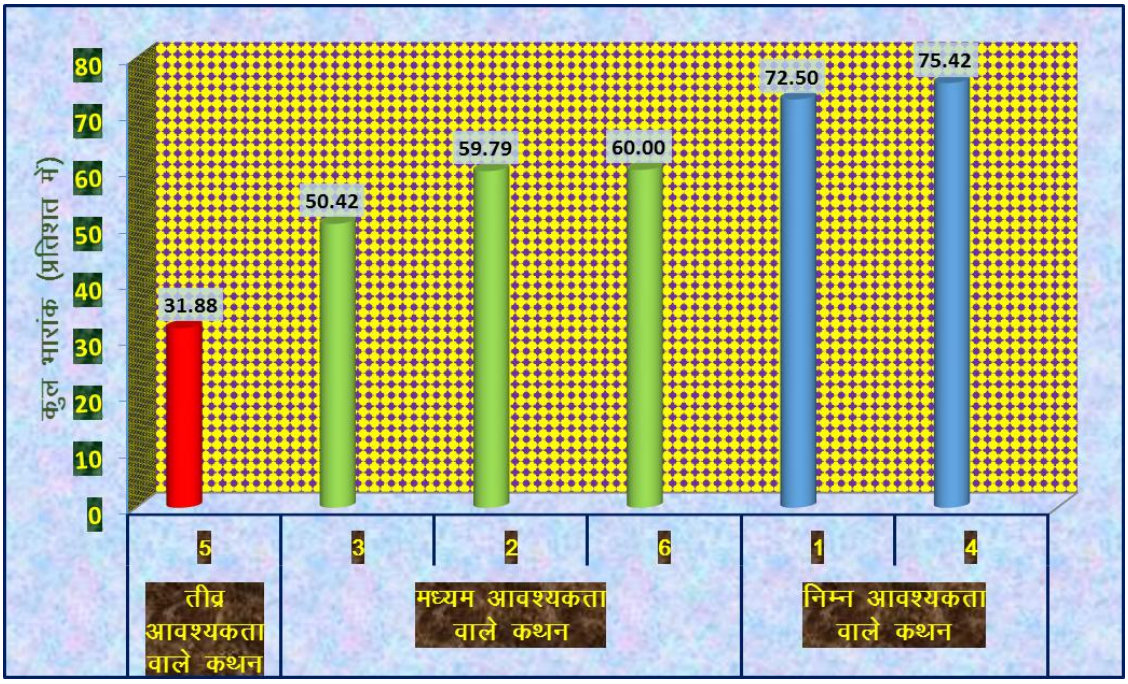

सारणी संख्या 1.2

एनसीएफ 2005 के अनुसार सामाजिक विज्ञान में सुधार से सम्बन्धित आवश्यकता

क्र. सं.	कथन ↓ वरीयता क्रमांक/वरीयता भारांक →	वरीयता प्रदाताओं की संख्या/उनका भारांक ↓ I / 6	II / 5	III / 4	IV / 3	V / 2	VI / 1	कुल भारांक (480 में से)	कुल भारांक का प्रतिशत
1	विषय की अनुभूतियाँ और ज्ञान, एक समतामूलक और शांतिमूलक समाज के ज्ञान–आधार तैयार करने की दिशा में जरूरी है।	30 / 180	12 / 60	10 / 40	12 / 36	16 / 32	0 / 0	348	72.50%
2	इसकी विषयवस्तु में परीक्षा के लिए तथ्यों का अंबार लगाए जाने के बजाए उसकी संज्ञानात्मक समझ विकसित किए जाने की आवष्यकता है।	11 / 66	16 / 80	14 / 56	19 / 57	8 / 16	12 / 12	287	59.79%
3	तेजी से बढ़ते सेवा क्षेत्र में सामाजिक विज्ञान की प्रासंगिकता बढ़ती जा रही है।	7 / 42	7 / 35	20 / 80	16 / 48	7 / 14	23 / 23	242	50.42%
4	प्रासंगिक स्थानीय विषयवस्तु सीखने–सिखाने का हिस्सा होनी चाहिए	25 / 150	24 / 120	11 / 44	10 / 30	8 / 16	2 / 2	362	75.42%
5	सामाजिक विज्ञान में प्राकृतिक और शारीरिक विज्ञानों की तरह वैज्ञानिक दृष्टि है।	0 / 0	4 / 20	8 / 32	7 / 21	19 / 38	42 / 42	153	31.88%
6	सामाजिक विज्ञान में विषयों की परस्परता को भी इसमे शामिल किया जाना चाहिए।	7 / 42	17 / 85	17 / 68	16 / 48	22 / 44	1 / 1	288	60.00%

आरेख संख्या 1.2

एनसीएफ 2005 के अनुसार सामाजिक विज्ञान में सुधार से सम्बन्धित प्रशिक्षण आवश्यकता का मात्रानुसार वर्गीकरण

उपरोक्त सारणी संख्या 1.2 व आरेख संख्या 1.2 से स्पष्ट है कि–

1. सामाजिक विज्ञान में प्राकृतिक और शारीरिक विज्ञानों की तरह वैज्ञानिक दृष्टि के होने को लेकर अध्यापक सबसे कम आश्वस्त हैं। यही कारण है कि उन्होने इसे सबसे कम भारांक दिया है। अतः इस सम्बन्ध में उन्हें प्रशिक्षित करने की तीव्र आवश्यकता है।
2. सेवा क्षेत्र में सामाजिक विज्ञान की बढ़ती प्रासंगिकता, इसे सूचनाओं के स्थान पर संज्ञानाधारित करने एवं विभिन्न विषयों की अन्तर्विषयिकता सम्बन्धी सुधारों को मध्यम आवश्यकता वाली प्रशिक्षण आवश्यकताओं में सम्मिलित किया गया है।

विषयानुभूति एवं ज्ञान को शांतिमूलक समाज के लिए अपरिहार्य बताने सम्बन्धी कथन को अध्यापकों ने निम्न प्रशिक्षण आवश्यकता के अन्तर्गत रखा है। संभवतः सामाजिक विज्ञान में सुधार के इस सुझाव से वे सहमति रखते हैं।

14. निष्कर्ष

उपर्युक्त अध्ययन से स्पष्ट होता है कि सामाजिक विज्ञान विषय के संबंध में माध्यमिक स्तर के अध्यापकों की प्राशिक्षण के दौरान तैयारी पर ध्यान दिए जाने की आवश्यकता है जिससे विषय से जुड़ी समस्याओं और चुनौतियों का समाधान किया जा सके। सारांशतः निम्नलिखित बिन्दुओं के माध्यम से निष्कर्ष को रेखांकित किया जा सकता हैः–

1. एक पृथक अनुशासन के रूप में सामाजिक विज्ञान विषय के साथ जो सबसे बड़ी समस्या है, वह है– इसकी प्रकृति को लेकर शिक्षकों एवं विद्यार्थियों में विद्यमान भ्रांति। आज भी इस विषय को एक ऐसे अनुपयोगी एवं अव्यावहारिक विषय के रूप में चिह्नित किया जाता है, जिसका ध्येय मात्र विभिन्न प्रकार की सूचनाएँ प्रदान करना भर है और जिसकी व्यावसायिक उपयोगिता लगभग न के बराबर है। यह भ्रांति अथवा पूर्व धारणा ही सामाजिक विज्ञान के विषयाध्यापकों के निमित्त प्रशिक्षणों के साथ सबसे बड़ी समस्या है। अतः इन प्रशिक्षणों की कार्यनीतियों का मुख्य ध्येय इस बात पर केन्द्रित रहना चाहिए कि कैसे अध्यापकों की इस प्रचलित धारणा का विखण्डन कर उन्हें सामाजिक विज्ञान की समावेशी प्रकृति, सामाजिक सोद्देश्यता, सेवा क्षेत्र जैसी व्यावसायिक प्रासंगिकता एवं सामाजिक उपयोगिता का अभिज्ञान करवाया जाए।
2. प्रशिक्षणों में सामाजिक विज्ञान के अध्यापकों को यह समझाने की भी अत्यन्त आवश्यकता है कि अन्य प्राकृतिक अथवा भौतिक विज्ञानों से तुलना कर इसकी वैज्ञानिकता का आकलन कदापि नहीं किया जा सकता। सामाजिक विज्ञान सामाजिक परिवेश एवं सम्बन्धों पर आधारित है, जो कि परिवर्तनीय है। भौतिक विज्ञान की भाँति इसमें रूढ़ सिद्धान्त प्रतिपादित नहीं किये जा सकते। अतः अध्यापकों को सामाजिक विज्ञान द्वारा मानवीय सम्बन्धों के विषय में की जा सकने वाली अनुमान–क्षमता का प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए। साथ ही इस संदर्भ में वैज्ञानिक दृष्टि का विकास किया जाना और प्रशिक्षण देना भी आवश्यक प्रतीत होता है।

15. शैक्षणिक निहितार्थ रूपी सुझाव

सामाजिक विज्ञान से जुड़ी स्थिति और प्रचलित धारणाओं से सम्बन्धित धारणाओं में विषय की अनुपयोगिता, नौकरी के अवसर नहीं तथा सूचनाओं के अंबार पर भी प्रशिक्षण कार्यक्रम को केन्द्रित किया जाना चाहिए क्योंकि यह महसूस किया जा सकता है कि समय और परिस्थितियों के अनुरूप पाठ्यक्रम और वातावरण में आए बदलावों के बावजूद भी सामाजिक विज्ञान के अध्यापकों में पूर्वाग्रह

विद्यमान है जिन्हें तुरन्त प्रभाव से प्रशिक्षण द्वारा नई दृष्टि से सोचने की ओर अभिप्रेरित किया जाना चाहिए।

16. उपसंहार

प्रस्तुत अध्ययन सामाजिक विज्ञान के माध्यमिक स्तर के अध्यापकों की प्रशिक्षण सम्बन्धी आवश्यकताओं पर केन्द्रित है। समय और परिस्थितियों में परिवर्तन को ही वर्तमान या बदलते संदर्भ के रूप में रेखांकित किया जा सकता है। विभिन्न दस्तावेजों, आलेखों तथा पुस्तकों की दृष्टि को ध्यान में रखते हुए यथासंभव प्रभावी कार्ययोजना का निर्माण कर तथ्यों को संकलित एवं विश्लेषित किया गया और उसीनुरूप शैक्षिक निहितार्थ की दृष्टि से सुझावों को उल्लेखित किया गया। इस प्रकार दिये गये सुझावों को समेकित रूप में देखने पर यह सुझाव दिया जा सकता है कि सामाजिक विज्ञान के अध्यापकों के प्रशिक्षण कार्यक्रम और कार्यशाला हेतु एक प्रभावी मॉड्यूल का निर्माण किया जाना चाहिए। मॉड्यूल का मूल उद्देश्य उपर्युक्त आवश्यकताओं को सम्मिलित करना होना चाहिए ताकि सामाजिक विज्ञान के अध्यापकों और विद्यार्थियों के साथ विषय की परिवर्तित भूमिका को भावी योजनाओं के साथ सकारात्मक रूप में परिमार्जित किया जा सके।

संदर्भ सूची

1. खोजें और जानें, सामाजिक विज्ञान शिक्षण, विद्याभवन सोसायटी, जनवरी 2013
2. शिक्षा आयोग, 1964–66
3. राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा, एनसीईआरटी, नई दिल्ली, 2005
4. सम्बलन, माध्यमिक कक्षाओं के शिक्षकों के लिए प्रशिक्षण मॉड्यूल, सामाजिक विज्ञान, राजस्थान माध्यमिक शिक्षा परिषद्, जयपुर
5. सामाजिक विज्ञान शिक्षण का आधार पत्र, एनसीईआरटी, नई दिल्ली, 2007
6. दस वर्षीय पाठ्यक्रम की रूपरेखा, एनसीईआरटी, नई दिल्ली, 1975–76
7. अध्यापक शिक्षा की राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा, एनसीटीई, नई दिल्ली, 2009
8. लर्निंग कर्व, स्कूलों में सामाजिक विज्ञान, अज़ीम प्रेमजी फाउण्डेषन, बंगलौर, 2011